<u>मनोविज्ञान के सम्प्रदाय (Schools of Psychology)</u>

2. प्रकार्यवाद (Functionlism):

प्रकार्यवादी विचारधारा का विकास **1842** में **अमेरिका** में हुआ। संरचनावादी सम्प्रदाय की प्रतिक्रिया के रूप में। हुआ। 'सर चार्ल्स डारविन' के विकासवादी सिद्धान्त का प्रभाव इस प्रकार्यवादी विचारधारा पर है। इस प्रकार्यवाद को वास्तविक स्वरूप जान डी.वी. और रोमेल्ड एन्जिल ने दिया। प्रकार्यवादी सिद्धान्त या सम्प्रदाय को दार्शनिक पृष्ठभूमि प्रयोजनवाद है और प्रकार्यवाद का आधार है 'क्यों और कैसे। मनोवैज्ञानिको द्वारा तमाम देशों में इस प्रकार्यवादी सम्प्रदाय का प्रसार हुआ है। इसके मुख्य सम्प्रदाय इस प्रकार हैं

1. कोलम्बिया सम्प्रदाय (Columbia School): कोलम्बिया विश्वविद्यालय के जेम्स कैटेल, एडवर्ड थार्नडाइक और राबर्ट वुडवर्थ इस सम्प्रदाय के प्रवर्तक थे। कैटेल ने काम किया- प्रत्यक्षज्ञान, भौतिकी और साहचर्य पर। थार्नडाइक ने काम किया बुद्धि मापन और अभिगम प्रक्रिया पर और राबर्ट वुडवर्थ ने तमाम प्रयोग भी किये और इन्हीं प्रयोगों के आधार पर प्रयोगात्मक मनोविज्ञान पर समकालीन मनोवैज्ञानिक सम्प्रदाय (Contemporary School of Psychology) की किताब लिखी। प्रकार्यवाद में समंजन पर बल दिया गया जिसके कारण विकास भी हुआ।

2. शिकागो सम्प्रदाय (Chicago School): इस सम्प्रदाय के लिये मुख्य रूप से जुड़े नाम हैं जान डीवी, जेम रोनेल्ड एन्जिल, हार्वेकर । मनोविज्ञान के क्षेत्र में 'मन' और बुद्धि की उपयोगिता पर विशेष बल जान डीवी ने दिया । जान डीवी ने इस बात पर प्रकाश डाला कि समस्या समाधान में किस तरह चिन्तन की प्रक्रिया काम करती है। डीवी ने उद्दीपन और अनुक्रिया में प्रथकता और सम्बन्धों की खोज की। अनुक्रिया और उद्दीपन कोई दो अलग-अलग वस्तुएँ

नहीं हैं। मनुष्य के जितने भी मानसिक कार्य हैं इनका कोई उद्देश्य या प्रयोजन जरूर होता है।

3. जेम्स रोनेल्ड एंजिल (James Ronald Angel) : एंजिल ने प्रकार्यवाद की स्पष्ट व्याख्या की है। जहाँ संरचनावाद का सम्बन्ध 'तत्व' या 'वस्तु' से है वहीं प्रकार्यवाद का सम्बन्ध है 'प्रक्रिया' से एंजिल इस बात की जानकारी करने पर ज्यादा जोर देते हैं कि मानसिक क्रियाओं या प्रक्रियाओं का स्वरूप 'क्या' है और ये 'किस' प्रकार काम करती है। मानसिक प्रकार्य परिस्थितियों के हिसाब से सम्पादित होते हैं तथा मन और शरीर दोनों मिलकर या संयुक्त रूप से क्रियाशील होते हैं और मनुष्य को ऐसे सहायता देते हैं कि वो अपने पर्यावरण से समायोजन कर सके।

प्रकार्यवाद का शिक्षा में योगदान (Contribution of Functionalism in Education)
इस सम्प्रदाय का शिक्षा के क्षेत्र में निम्न योगदान है

1. प्रकार्यवाद ने मन और शरीर की संयुक्त (एक साथ) क्रियाशीलता पर बल दिया। कार्यवादियों का ऐसा विचार था कि मन के बिना शरीर और शरीर के बिना मन का अध्ययन पूरा नहीं होगा अर्थात अधूरा है। शरीर और मन दोनों एक साथ क्रिया करते हैं ।

2. अधिगम प्रक्रिया के लिये इस विचारधारा ने पर्यावरण और समायोजन पर बल दिया।

3. प्रकार्यवाद ने शिक्षा में उपयोगिता के सिद्धान्त को पैदा किया और पाठ्यक्रम में उन्हीं विषयों पर जोर दिया जो समाज और व्यक्ति के लिये उपयोगी हों।

4. इस सम्प्रदाय के लोगों ने तमाम सारे शोध कार्य किये ये शोध कार्य व्यक्तिगत मित्रता, अधिगम, बुद्धि, समायोजन, परीक्षण और मूल्यांकन आदि पर थे। इन शोधों का शिक्षा पर प्रभाव पड़ा।